[नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत CBSE द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं NCERT द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों पर आधारित]

संजीव रिफ्रेशर

हिन्दी

(कक्षा 7 के विद्यार्थियों के लिए)

मुख्य विशेषताएँ

1. सभी कविताओं का कविता सार
2. सम्पूर्ण कविताओं का कठिन शब्दार्थ सहित भावार्थ
3. काव्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
4. सभी गद्य पाठों का सार
5. सभी गद्य पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ
6. महत्त्वपूर्ण गद्यांशों पर आधारित बहुवैकल्पिक प्रश्न एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न
7. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्न
8. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न
9. व्याकरण
10. अपठित बोध
11. प्रार्थना-पत्र एवं पत्र
12. निबन्ध
13. अनुच्छेद-लेखन
14. संवाद-लेखन
15. सूचना-लेखन

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
जयपुर

मूल्य :
₹ 200.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

वसंत : भाग-2

1.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के	(शिवमंगल सिंह 'सुमन')	1-9
2.	हिमालय की बेटियाँ	(नागार्जुन)	10-19
3.	कठपुतली	(भवानीप्रसाद मिश्र)	20-25
4.	मिठाईवाला	(भगवतीप्रसाद वाजपेयी)	26-36
5.	पापा खो गए	(विजय तेंदुलकर)	37-48
6.	शाम—एक किसान	(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)	49-54
7.	अपूर्व अनुभव	(तेत्सुको कुरियानागी)	55-63
8.	रहीम के दोहे	(रहीम)	64-70
9.	एक तिनका	(अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध')	71-77
10.	खानपान की बदलती तसवीर	(प्रयाग शुक्ल)	78-87
11.	नीलकंठ	(महादेवी वर्मा)	88-100
12.	भोर और बरखा	(मीरा बाई)	101-106
13.	वीर कुँवर सिंह		107-117
14.	संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया : धनराज	(विनीता पाण्डेय)	118-125
15.	आश्रम का अनुमानित व्यय	(मोहनदास करमचंद गांधी)	126-132

बाल महाभारत कथा
(पूरक पाठ्यपुस्तक)

1.	देवव्रत	133-134
2.	भीष्म-प्रतिज्ञा	135-136
3.	अंबा और भीष्म	137-138
4.	विदुर	139-140
5.	कुंती	141-142

6.	भीम	143–144
7.	कर्ण	145–146
8.	द्रोणाचार्य	147–148
9.	लाख का घर	149–150
10.	पांडवों की रक्षा	151–153
11.	द्रौपदी–स्वयंवर	154–155
12.	इंद्रप्रस्थ	156–157
13.	जरासंध	158–159
14.	शकुनि का प्रवेश	160–161
15.	चौसर का खेल व द्रौपदी की व्यथा	162–163
16.	धृतराष्ट्र की चिंता	164–165
17.	भीम और हनुमान	166–167
18.	द्वेष करनेवाले का जी नहीं भरता	168–169
19.	मायावी सरोवर	170–171
20.	यक्ष–प्रश्न	172–173
21.	अज्ञातवास	174–175
22.	प्रतिज्ञा–पूर्ति	176–177
23.	विराट का भ्रम	178–179
24.	मंत्रणा	180–181
25.	राजदूत संजय	182–183
26.	शांतिदूत श्रीकृष्ण	184–185
27.	पांडवों और कौरवों के सेनापति	186–187
28.	पहला, दूसरा और तीसरा दिन	188–189
29.	चौथा, पाँचवाँ और छठा दिन	190–191
30.	सातवाँ, आठवाँ और नवाँ दिन	192–193
31.	भीष्म शर–शय्या पर	194–195
32.	बारहवाँ दिन	196–197
33.	अभिमन्यु	198–199

34.	युधिष्ठिर की चिंता और कामना	200–201
35.	भूरिश्रवा, जयद्रथ और आचार्य द्रोण का अंत	202–203
36.	कर्ण और दुर्योधन भी मारे गए	204–205
37.	अश्वत्थामा	206–207
38.	युधिष्ठिर की वेदना	208–209
39.	पांडवों का धृतराष्ट्र के प्रति व्यवहार	210–211
40.	श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर	212–213
	पाठ्यपुस्तक के प्रश्न	**213–217**

व्याकरण-भाग

1.	संज्ञा	218–221
2.	संज्ञा के विकारक तत्त्व	221–228
3.	सर्वनाम	229–231
4.	विशेषण	231–236
5.	क्रिया	237–239
6.	काल	240–242
7.	क्रियाविशेषण (अव्यय)	242–245
8.	अव्यय	245–249
9.	उपसर्ग	249–252
10.	प्रत्यय	252–257
11.	संधि	257–262
12.	समास	263–268
13.	शब्द भेद	268–271
14.	विराम-चिन्ह	271–274
15.	वाक्य भेद	274–278
16.	मुहावरे	278–282
17.	लोकोक्तियाँ	282–286
18.	शुद्ध और अशुद्ध वाक्य	286–290

19.	विलोम शब्द	290–292
20.	एकार्थी शब्द	293–294
21.	अनेकार्थी शब्द	294–297
22.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (एकल शब्द)	297–300
23.	पर्यायवाची शब्द	300–304
24.	पुनरुक्त शब्द	304–306
25.	युग्म-शब्द	306–309

रचना-भाग

1.	अपठित बोध	310–316
2.	प्रार्थना-पत्र एवं पत्र	317–321
3.	निबन्ध	322–332
4.	अनुच्छेद लेखन	333–334
5.	संवाद-लेखन	335
6.	सूचना-लेखन	336–337

हिन्दी कक्षा-7

वसंत-भाग 2

पाठ 1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

(शिवमंगल सिंह 'सुमन')

कविता का सार

'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' कविता के माध्यम से कवि शिवमंगल सिंह सुमन ने पिंजरे में बंद पक्षी के माध्यम से आज़ादी के महत्त्व को दर्शाया है। पिंजरे में बंद पक्षी अपनी वेदना प्रकट करते हुए कहता है कि हम खुले आसमान में विचरण करने वाले पक्षी हैं। हमें पिंजरे में बंद करके हमारी आज़ादी मत छीनो। हमें सोने की कटोरी में मैदा की अपेक्षा स्वतन्त्र रहकर कड़वी निंबोली अच्छी लगती है। गुलामी रूपी पिंजरे में बन्द रहने से हम अपनी उड़ान भूल जायेंगे और हमारे सारे अरमान मिट जायेंगे। इस तरह पिंजरे में बंद पक्षी स्वतंत्रतापूर्वक उड़ान भरने के स्वप्न देखता है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से परतंत्र जीवन के क्षणिक सुख की अपेक्षा कष्ट पाकर भी स्वतंत्र जीवन जीने को श्रेष्ठ बताया गया है।

काव्यांशों की व्याख्या–

(1)

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

कठिन शब्दार्थ–**पंछी** = पक्षी। **उन्मुक्त** = स्वतंत्र। **गगन** = आकाश। **पिंजरबद्ध** = पिंजरे में बंद। **कनक** = सोना/स्वर्ण। **तीलियाँ** = सलाखें। **पुलकित** = कोमल।

प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश हमारी पुस्तक वसंत भाग दो के 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' पाठ से लिया गया है। इस कवितांश में पिंजरे में बंद पक्षी ने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा है कि—

व्याख्या–हम स्वतंत्र आकाश में विचरण करने वाले पक्षी हैं, हम पिंजरे में बंद होकर नहीं रह पाएँगे। उड़ने की चाहत में इस सोने के पिंजरे की सलाखों से टकरा-टकराकर हमारे कोमल पंख टूट जाएँगे। कवि वास्तव में पक्षियों के माध्यम से मनुष्य के लिए स्वतंत्रता का महत्त्व बतलाना चाहता है कि गुलाम मनुष्य वस्तुत: स्वाभाविक जीवन भी जीना भूल जाता है।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. पिंजरे में बंद पक्षी क्या चाहता है?

(अ) आराम से सोना (ब) उन्मुक्त आकाश में उड़ना
(स) गुनगुनाना (द) चहकना

2. पिंजरे में बंद रहकर पंछी क्या नहीं कर पाएँगे?
(अ) गा नहीं पाएँगे (ब) खा नहीं पाएँगे
(स) सो नहीं पाएँगे (द) खेल नहीं पाएँगे

3. कनक-तीलियों से टकरा कर क्या होगा?
(अ) पिंजरा टूट जाएगा (ब) पंछी उड़ जाएँगे
(स) कोमल पंख टूट जाएँगे (द) तीलियाँ बिखर जाएँगी

4. पिंजरा किस से बना हुआ है?
(अ) लोहे से (ब) लकड़ी से (स) चाँदी से (द) सोने से

उत्तर–1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (द)

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. पक्षी कहाँ पर बंद है?
उत्तर–पक्षी पिंजरे में बंद है।
प्रश्न 2. पिंजरे में बंद पक्षी क्या चाहता है?
उत्तर–पिंजरे में बंद पक्षी खुले आसमान में उड़ना चाहता है।
प्रश्न 3. पक्षी आसमान में क्यों उड़ना चाहता है?
उत्तर–आसमान में उड़ना पक्षी की स्वाभाविक प्रकृति है।
प्रश्न 4. कनक-तीलियों से टकराने से क्या होगा?
उत्तर–कनक-तीलियों से टकराने से पक्षी के कोमल पंख टूट जाएँगे।

(2)

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।

कठिन शब्दार्थ–जल = पानी। **भूखे-प्यासे** = बिना कुछ खाए-पिए। **भली** = अच्छी। **कटुक** = कड़वी। **निबौरी** = निंबोली (नीम के वृक्ष का फल)। **कटोरी** = प्याली (एक प्रकार का बर्तन)।

प्रसंग–यह पद्यांश 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' पाठ से लिया गया है। इसमें पिंजरे में बन्द पक्षी की व्यथा का प्रतीक रूप में वर्णन किया गया है।

व्याख्या–पिंजरे में बंद पक्षी अपनी व्यथा सुनाते हुए कहता है कि हम तो नदियों और झरनों का बहता हुआ पानी पीने वाले है, पिंजरे में बंद रह कर हम भूख-प्यास से मर जाएँगे। पिंजरे में सोने की कटोरी में रखी मैदा से नीम की कड़वी निबौरियाँ खाना हमें ज्यादा भाता है। भावार्थ यह है कि परतंत्रता में मिलने वाले सुख से स्वतंत्र रहकर कष्ट पाना अधिक अच्छा है।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. 'हम बहता जल पीने वाले' वाक्यांश में 'हम' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(अ) पक्षियों के लिए (ब) पशुओं के लिए
(स) इंसानों के लिए (द) मछलियों के लिए

2. पक्षियों को कहाँ का पानी पीना पसंद है?
(अ) कटोरी का (ब) नल का (स) नदी-झरनों का (द) कुएँ का

3. भूखे-प्यासे मरने की बात कौन करता है?
(अ) पेड़-पौधे (ब) पक्षी

(स) जानवर (द) मनुष्य

4. पक्षियों को क्या खाना ज्यादा अच्छा लगता है?
(अ) मीठे फल (ब) मैदा के पकवान
(स) अनाज के दाने (द) कड़वी निबौरी

उत्तर–1. (अ), 2. (स), 3. (ब), 4. (द)

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. पक्षी कहाँ का जल पीना पसंद करते हैं?
उत्तर–पक्षी बहते हुए नदी और झरनों का जल पीना पसंद करते हैं।
प्रश्न 2. यदि पक्षी पिंजरे में ही बंद रहेंगे तो क्या होगा?
उत्तर–पक्षी पिंजरे में ही बंद रहेंगे तो भूखे-प्यासे मर जाएँगे।
प्रश्न 3. पक्षियों को कड़वी निबौरी भी अच्छी क्यों लगती है?
उत्तर–पक्षियों को कड़वी निबौरी खाने में आज़ादी का एहसास होता है।
प्रश्न 4. कनक-कटोरी से क्या आशय है?
उत्तर–कनक-कटोरी से आशय है बिना परिश्रम किए परतंत्र रहकर आराम से जीना।

(3)

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

कठिन शब्दार्थ–**स्वर्ण-शृंखला** = सोने की सलाखें/कड़ियाँ। **बंधन** = परतंत्रता। **गति** = चाल। **तरु** = वृक्ष/पेड़। **फुनगी** = पेड़ का सबसे ऊपरी भाग। **पर** = पंख।

प्रसंग–यह पद्यांश 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' पाठ से लिया गया है। इसमें कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने पिंजरे में बन्द पक्षी के मनोभावों का वर्णन किया है।

व्याख्या–पिंजरे में बंद पक्षी कहता है कि सोने की सलाखों से बने इस पिंजरे में बंद रह कर हम अपनी गति, अपनी उड़ान सब भूल गए हैं। पेड़ों की कोमल शाखाओं पर बैठना और अपने पंखों के झूले झूलना तो जैसे सपनों में देख रहे हैं। भावार्थ यह है कि गुलामी के जीवन में व्यक्ति अपना स्वाभाविक जीवन जीना भी भूल जाता है, चाहे फिर उसे कितनी भी सुख-सुविधाएँ क्यों न मिलें।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. पक्षी अपनी उड़ान कब भूल गए?
(अ) पंख टूट जाने पर (ब) घोंसला उजड़ जाने पर
(स) पिंजरे में बंद हो जाने पर (द) शिकारी के आ जाने पर

2. पिंजरे में बंद पक्षी क्या देख रहे हैं?
(अ) सपने (ब) खाना (स) पानी (द) कटोरी

3. पक्षियों को सपने में क्या दिखाई देता है?
(अ) दाना चुगना (ब) फल खाना
(स) उड़ जाना (द) पेड़ों पर झूलना

4. 'तरु की फुनगी' से क्या आशय है?
(अ) पेड़ के पत्ते (ब) पेड़ की सबसे ऊँची टहनी
(स) फल (द) फूल

उत्तर–1. (स), 2. (अ), 3. (द), 4. (ब)

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. पक्षी किसके बंधन में बँधे हुए हैं?

उत्तर–पक्षी स्वर्ण-शृंखला के बंधन में बँधे हुए हैं।

प्रश्न 2. पिंजरे में बंद पक्षी क्या भूल गए?

उत्तर–पिंजरे में बंद पक्षी अपनी गति और उड़ान भूल गए।

प्रश्न 3. पक्षी सपनों में क्या देखते हैं?

उत्तर–पक्षी पेड़ों की ऊँची टहनियों पर बैठकर झूला झूलने का सपना देखते हैं।

प्रश्न 4. पिंजरे में रहकर पक्षी क्यों परेशान है?

उत्तर–पिंजरे में रहकर अपनी स्वाभाविक प्रकृति का दमन होने के कारण पक्षी परेशान है।

(4)

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

कठिन शब्दार्थ–अरमान = चाहत/अभिलाषा/इच्छा। **नभ** = आसमान। **सीमा** = हद/सरहद। **तारक-अनार के दाने** = तारे रूपी अनार के दाने। **लाल किरण सी** = उगते हुए सूरज की लाल किरण सी। **चुगना** = खाना।

प्रसंग–यह पद्यांश 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' पाठ से लिया गया है। इसमें कवि ने पिंजरे में बन्द पक्षी को अपनी चाहत प्रकट करते हुए बताया है।

व्याख्या–पिंजरे में बंद पक्षी अपनी व्यथा सुनाते हुए कहता है कि उसकी भी चाहत थी कि वो भी आज़ाद रहकर नीले आसमान की सीमा तक उड़ता और सूरज की लाल किरणों जैसी चोंच खोलकर आकाश के तारों रूपी अनार के दानों को चुगता रहता।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न–

1. पक्षी का अरमान क्या है?
   (अ) फल खाना (ब) झूला झूलना
   (स) आसमान में उड़ना (द) घोंसला बनाना
2. पक्षी की चोंच का रंग क्या है?
   (अ) नभ-सा नीला (ब) फूल-सा पीला
   (स) कोयला-सा काला (द) किरण-सा लाल
3. 'नीले नभ की सीमा पाने' का क्या अर्थ है?
   (अ) सीमा पार चले जाना (ब) बहुत ऊँचाई तक उड़ना
   (स) आसमान को छूना (द) आसमान के अंदर चले जाना
4. पक्षी क्या चुगना चाहता है?
   (अ) तारक-अनार के दाने (ब) लाल अनार के दाने
   (स) अनाज के दाने (द) खेतों में पड़ा धान।

उत्तर–1. (स), 2. (द), 3. (ब), 4. (अ)

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

प्रश्न 1. पक्षी अपनी चाहत क्या बताता है?

उत्तर–पक्षी नीले आसमान तक उड़ने को अपनी चाहता बताता है।

प्रश्न 2. लाल किरण-सी चोंच का क्या अर्थ है?

उत्तर–उगते हुए सूरज की लालिमा जैसे रंग की चोंच।

प्रश्न 3. 'तारक-अनार के दाने' का क्या आशय है?
उत्तर—आसमान में बिखरे हुए अनार के दानों जैसे तारे।
प्रश्न 4. आसमान का रंग कैसा होता है?
उत्तर—आसमान का रंग नीला होता है।

(5)

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

कठिन शब्दार्थ—**सीमाहीन** = जिसकी कोई सीमा नहीं हो। **क्षितिज** = वह स्थान जहाँ धरती और आसमान मिलते हुए से प्रतीत होते हैं। **होड़ा-होड़ी** = एक-दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतियोगिता। **मिलन** = मिलना। **तनती साँसें** = मृत्यु के समय जैसी टूटती हुई साँसें।

प्रसंग—यह पद्यांश 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' पाठ से लिया गया है। इसमें पिंजरे में बन्द पक्षी को अपनी चाहत प्रकट करते हुए दर्शाया गया है।

व्याख्या—पक्षी अपनी चाहत बताते हुए कहता है कि आकाश की ऊँचाइयों को छूते हुए उसके पंखों में ऐसी होड़ लग जाती कि उड़ते-उड़ते वे या तो धरती व आकाश के मध्य भाग को एक साथ छू जाते या अपने साँसों की डोरी को तोड़ डालते, अर्थात् अपने प्राण गँवा देते।

काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न—

1. पक्षी कहाँ तक उड़ना चाहता है?
   (अ) जंगल में (ब) क्षितिज तक (स) सूरज तक (द) तारों तक
2. क्षितिज की सीमा कहाँ होती है?
   (अ) आसमान तक (ब) समुद्र तक
   (स) पृथ्वी पर (द) यह सीमाहीन होता है
3. पक्षी उड़ने में किससे होड़ करना चाहता है?
   (अ) हवा से (ब) अपने पंखों से (स) आसमान से (द) उक्त सभी से
4. यदि पक्षी क्षितिज तक नहीं पहुँच पाता तो क्या करता?
   (अ) वापस आ जाता (ब) उड़ना बंद कर देता
   (स) प्राण गँवा देता (द) निराश हो जाता।

उत्तर—1. (ब), 2. (द), 3. (ब), 4. (स)

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न—

प्रश्न 1. पक्षी अपनी चाहत किसे बताता है?
उत्तर—पक्षी सीमाहीन क्षितिज को पाने को अपनी चाहत बताता है।
प्रश्न 2. क्षितिज किसे कहते हैं?
उत्तर—बहुत दूर जहाँ पर धरती और आसमान एक-दूसरे से मिलते हुए से प्रतीत होते हैं उसे क्षितिज कहते हैं।
प्रश्न 3. पंखों की होड़ा-होड़ी से क्या आशय है?
उत्तर—पंखों की होड़ा-होड़ी का आशय है और अधिक उड़ने की चाहत में लगातार पंखों को फैलाये रहना।
प्रश्न 4. यदि पक्षी क्षितिज तक नहीं पहुँच पाता तो क्या करता?
उत्तर—यदि पक्षी क्षितिज तक नहीं पहुँच पाता तो अपने प्राण गँवा देता।

(6)

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,